वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जनवरी – 2021

मनुष्य जो कुछ धर्म नहीं उसे धर्म समझते हैं
आत्मा की खुराक
दो प्रेरणादायक पत्र
माता–पिता सन्तान का सम्बन्ध
हम कैसे माता–पिता है?
मां कहेंगी नहीं, लेकिन उन्हें आपसे
समय, सम्मान और सहयोग चाहिए
अमरीका के एक विचारशील जन का स्वप्न
किस तरह पूरा हुआ?
हां कहें या न कहें
आप अण्डा खा रहे हैं या अण्डा आपको

बाकि पृष्ठ 20

75 इंची 76 इंची बहुत थोड़ी जगह में नाना संत्रासों और तनावों के बीच कैद रखा जाता है। उनका तनाव अण्डा खाने वालों के खून में पहुंचकर उनके व्यक्तित्व को असंतुलित करता है। अहिंसक भूमि पर अण्डा और मांसाहार जैसी हिंसक वृत्तियों के बढ़ने से न केवल देश के आदर्शों, मूल्यों और महान परहितकारी परम्पराओं का बल्कि देश के महत्वपूर्ण व्यक्तियों तक का सरेआम वध हो रहा है।

स्वाद और संचय, विज्ञान और तकनीक शास्त्र ने हमारे खानपान की समस्या को अधिक उलझा दिया है एवं सरकार और उसके प्रचार माध्यम भी जनता के साथ छल-कपट पर आमादा हैं। टी०वी० रेडियो और अखबारों में खाद्य वस्तुओं के कपटपूर्ण भड़कीले विज्ञापन भारतीय जनता का सुनियोजित शोषण ही करेंगे। अण्डा धूम्रमान की तरह स्वास्थ्य के लिए घातक है। ये जहर ही जहर है। आप अण्डा नहीं खा रहे हैं किन्तु अण्डा आपको खा रहा है। न तो अण्डा शाकाहार है, न ही यहां की भूमि के निवासियों के लिए उपयुक्त आहार। जितनी देर में आप यह पढ़ रहे हैं उतनी देर में 5000 चूजों की जान ली जा चुकी है।

मुर्गो के शुक्राणु मुर्गी के शरीर में एक लम्बी अवधि तक पड़े रहते हैं। (छः माह तक भी) इसलिए मुर्गे की अनुपस्थिति में मुर्गी अण्डे देती रहती है, वो सजीव ही होते हैं, मुर्गी के शरीर से ही उत्पन्न होते हैं। उसमें भी जीवन अनिवार्य रूप से है और जीव के सारे लक्षण श्वासोचछवास, बुद्धि, खुराक लेना आदि पाये जाते हैं। जिसमें जीवन के लक्षण हों, वो ही जीव है। अफलन शील अंडा (चूजा अंडे में से बाहर न असके) मृत या अजीव नहीं कहा जा सकता है। स्त्री डिम्बोत्सर्ग (रजोधर्म) माह में एक बार करती है जिसका परिणाम गर्भ नहीं किंतु मुर्गी अण्डोत्सर्ग (रजोधर्म) 22 से 23 घंटे में करती है, अंडा देती है। चूजे और अण्डे हिंसा और क्रूरता से बनते हैं, इसमें धन की राक्षसी लिप्सा है। शाकाहारी अण्डा एक भ्रामक नाम एवं फरेब है। अण्डा सब्जी नहीं है। धार्मिक ग्रंथ अथर्ववेद में कहा गया है कि मैं उन दुष्टों को नष्ट कर देता हूं जो अण्डे और मांस खाते हैं। अण्डे के कवच (शैल) में शवासोच्छ्वास के लिए सूक्ष्म छिद्र होते हैं। सेये गये अंडे जन्म पूर्व चूजे हैं ओर बगैर सेये अंडे जो मुर्गी के यौन चक्र के उत्पाद हैं अत्यन्त अप्राकृतिक हैं, दोनों मांसाहार हैं।

अण्डा उत्पादन गृह (हैचरिया) अण्डा देने वाली मुर्गियां तैयार करते हैं। चूजों को तंग और तकलीफ देह पिंजरों में रखा जाता है वे सहज ही हिंसक, हमलावार, कुंठित, कलही हो जाते हैं और एक दूसरे पर बर्बर आक्रमण करते हैं। रात को तेज प्रकाश में जब वो अन्धेरे में पड़े रहते हैं, उनकी चोंचे काट दी जाती है ताकि कम जगह में रह सकें और जागते रहें। जिससे पानी पीना भी हराम हो जाता है। ज्यादातर मुर्गियों को कैंसर, दमा ब्रोकाइटीज जैसे असाध्य रोग हो जाते हैं। 20 प्रतिशत मर जाती हैं। जिनकी खाद्य बनाकर रोएंदार पशुओं को खिलाई जाती है। नर चूजों को बेरहमी से प्लास्टिक की थैलियों में दम घोट कर मार डालते हैं। चूजे की आयु लगभग 12 वर्ष होती है किंतु ब्राइलरों को आठ हफ्तों में ही मार डालते हैं। अण्डा देने वाली मुर्गी को 12 से 24 महीनों में मौत के घाट उतार देते हैं। पौल्ट्री फार्मो में 5000 से अधिक दवाइयां और इतने ही केमिकल्स (रसायन) काम में लाते हैं। मुर्गियों को ताजी हवा धूप, स्वतंत्रता, प्रसन्नता नहीं मिलती, वे बुरी तरह त्रस्त, कुंठित हो जाती हैं। चूजे की टांगे काटने से उनमें तनाव, प्रतिहिंसा, लाचारी, झुंझलाहट हो जाती है। अंडा खाने वालों को दवाओं का जहरीला असर एवं मानसिक विकार एवं अनेक असाध्य रोग होना स्वाभाविक है क्योंकि अनेक रोगी मुर्गियां व कई दिन पुराने अंडे व बीमार चूजे भी खरीद कर खाते हैं, ये ज़हर ही ज़हर है।

धर्म जीवन

खण्ड 32 अंक 1
जनवरी – 2021
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मनुष्य जो कुछ धर्म नहीं उसे धर्म समझते हैं

धर्म का सम्बन्ध मनुष्य आत्माओं के भीतर जीवन विषयक या आत्मा विषयक या मनुष्य की जीवनी शक्ति विषयक ज्ञान और होश से है। अर्थात आत्मा की हानि और हित से है। आत्मा के हित - अहित के विवेक और जागृति से है। जीवनी शक्ति की विकास प्राप्त अवस्था ही मनुष्य की आत्मा की जान है व जीवनी शक्ति या आत्मा ही मनुष्य की हस्ती में असल सत्य, मूल व सार वस्तु है। इसको लेकर ही मनुष्य - जीवन की सारी लीला है। इसके बनने बिगड़ने, इसके विकास - विनाश को लेकर ही धर्म है। जिन बातों का मनुष्य की जीवनी शक्ति अर्थात् आत्मा के साथ कोई सम्बन्ध न हो और आत्मा की हानि हित के विवेक की जागृति से सम्बन्ध न हो, वो बातें चाहे लाखों - करोड़ें इन्सान कैसी भी प्रिय और अच्छी समझते हों उनका धर्म के साथ कोई लेना देना नहीं होता अर्थात वह धर्म नहीं होती। बल्कि पानी में मधानी मारने जैसी ही हैं।

परम पू० भगवान देवात्मा ने उपास्य, उपास्य देवतों और धर्म ग्रन्थों और परलोक आदि को लेकर और पूजा की विधियों को लेकर, चिन्हों के धारण आदि को लेकर, तीर्थों को लेकर चार मोटी बातें व्यक्त की हैं जो धर्म समझी जाती हैं पर वो धर्म नहीं हैं उन्हें नीचे दिया जाता है।

(i) इस व उस उपास्य देवता इस वा उस गुरू, इस वा उस पुस्तक, इस वा उस पैगम्बर, इस वा उस मोक्ष वा परलोक विषयक कल्पित कहानी के मानने अथवा औरों के सन्मुख झूठ मूठ स्वीकार करने का नाम धर्म जानते हैं, और इसी प्रकार के कल्पित मत भेद को लेकर मनुष्य आत्मा अलग - अलग सम्प्रदायों और समाजों में विभक्त हो रहे हैं। ऐसा होता है कि एक जन जो आज सनातन धर्मी हिन्दु था वह कल आर्य धर्मी वा ईसाई वा मुस्लमान आदि बनकर यद्यपि जीवन के विचार से पहले से भी बुरा और नीच बनता जाता है, परन्तु वह केवल अपने मत पर फूलता रहता है, कि जो मत भी कल्पित होता है। और वह अपने जीवन और उसके विकास और विनाश सम्बन्धी अटल नियमों के ज्ञान के विचार से केवल अन्धकार का जीव रहता है।

(ii) किसी एक वा दूसरी पूजन विधि के पूरा करने का नाम धर्म समझते हैं, जैसे गायत्री का जाप और संध्या और तर्पण और सुखमनी और जपजी का पाठ, नमाज, दुआ, अराधना और प्रार्थना अथवा किसी उपास्य देवता का कोई कल्पित ध्यान आदि करना, जबकि यह सब करके भी उनका जीवन दिनों दिन अधोगति को प्राप्त होता रहता है।

(iii) ब्राह्मण एक व दूसरे प्रकार के चिन्ह धारण व अनुष्ठान आदि का नाम धर्म समझते हैं, जैसे सिर पर केश व शिखा रखना, जनेऊ पहनना, तिलक और छाप लगाना, कंठी और माला पहनना, मुण्डन कराना, भभूत मलना, नीले पीले और गेरूवे वस्त्र आदि पहनना,

दण्ड कमण्डल आदि रखना, किसी के हाथ का बनाया हुआ भोजन न खाना, उपवास करना, कल्पित छूतछात से डरना, खतवा कराना और विवाह न कराना आदि। (iv) तीर्थों के नाम से कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, मथुरा, वृन्दावन, प्रयाग, काशी, बद्रीनाथ, जगन्नाथ, सारनाथ, गया, मक्का, मदीना और येरूशलम आदि स्थानों का भ्रमण और मूर्तियों और मन्दिरों और कबरों और समाधियों आदि का दर्शन और विविध नदियों और जलाशयों में स्नान आदि करने का नाम धर्म समझते हैं। धर्म का सम्बन्ध कुछ शब्द जपने - जपाने से या सुनने सुनाने से हरगिज नहीं होता बल्कि धर्म का सम्बन्ध अपनी आत्मिक नीचता, मलीनता और दुर्बलता को बदलने और बेहतर करने से होता है। या ये कहा जाए कि असली तौर पर अपना कुछ घटियापन घटाने और पहले से अच्छा और बेहतर करने से होता है। केवल पढ़ना पढ़ाना या सुनना - सुनाना निरर्थक रहता है।

धर्म का सम्बन्ध भावनाओं से है अर्थात् उच्च भावनाएँ ही धर्म हैं। ज्यूँ ज्यूँ मनुष्य के भीतर उच्च भावनाओं की बढ़ोत्तरी और विकास होता जाएगा, त्यों त्यों मनुष्य का जीवन भी बेहतर होता जाएगा। सबसे ज्यादा जरूरत उच्च भावनाओं को पैदा करने और बढ़ाने की है। उच्च भाव ही कीमती और सच्ची दौलत हैं। उच्च भावों के बगैर कोई धर्म नहीं होता, कोई भलाई नहीं होती, कोई सुख - शान्ति नहीं होती कोई त्याग या पर के काम आने की कोई क्रिया नहीं होती। और उच्च भावनाओं अर्थात पवित्रता, ईमानदारी, इन्साफ आदि को छोड़कर सात्विक भावनाएँ विशेषकर सम्मान और श्रद्धा, कृतज्ञता और दया आदि बहुत उत्तम भावनाएँ है। मनुष्य का सारा जोर अपनी इन भावनाओं को बढ़ाने के प्रयास पर लगा रहना चाहिए। जिस प्रकार हमारी सम्मान और श्रद्धा की भावनाएँ बढ़ेगीं उसी प्रकार हमारे अन्दर दीनता और नम्रता और दूसरों के काम आने का भाव पैदा होगा। कृतज्ञता का भाव और भी बहुमुल्य भाव है। इसकी उपस्थिति और उन्नति सच्चे स्वर्ग और उच्च खुशियों की सूचक है। उच्च भावनाओं से दुराचारों का मूल नाश होता है। सच्चा सुख शान्ति आती है। पर सेवा से मनुष्य खुदगर्जी से निकलता है और किसी की निष्काम सेवा करने से जो अमूल्य सुख और रस प्राप्त होते हैं, निराली ही दुनिया में आँखे खोलता है।

सात्विक भावों के विकसित होने से आत्मा का विवेक और होश आना आरम्भ होता है। आत्मा की हानि और हित साफ दिखाई देने और महसूस होने लगता है। उच्च गति और नीच गति का बोध होता है। उच्च गतियों में अपना जान और प्राण दिखाई देने लगता है। नीच गतियों में नाश और मौत अनुभव होने लगता है। इसीलिए भगवान देवात्मा फरमाते हैं धर्म से बढ़कर और कोई भी लाभ नहीं और धर्म को छोड़कर और कोई बड़ी हानि भी नहीं।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने अपने महान ग्रन्थ 'मुझ में देव जीवन का विकास भाग I में ऐसी बहुत सी बातें वर्णन की हैं, कि जिनका मनुष्य आत्मा या उसकी जीवनी शक्ति या धर्म आदि से कोई सम्बन्ध नहीं है।

निष्कर्ष यह है कि नीच भावों अर्थात घमंड, घृणा, इर्षा, द्वेष, अनुचित मान बड़ाई, स्वार्थ, अनुचित मोह, शरीर सम्बन्धी नीच भावों अर्थात स्वाद अनुराग, आलस्य अनुराग, नशा अनुराग आदि नीच भावों से निकलना और इन भावों द्वारा जो नीच गतियां, अपहरणकारी गतियां की है, उनको सामने लाकर उनके लिए पश्चाताप करना और उनका परिशोध करना धर्म है। अगर इनमें से कुछ भी नीच भाव घट जाएं और थोड़े थोड़े उच्च भाव बढ़ जाएं, तो घरों में स्वर्ग आ जाएगा। यह उच्चतम शिक्षा परम पूजनीय भगवान ने बड़े कष्टों में से गुज़रकार खोजी है, हम बहुत सौभाग्यवान हैं जो अपनी अपनी योग्यता के अनुसार इसको समझ सके हैं और कुछ न कुछ अपने जीवनों में उतार चुके हैं।

- बलदेव सिंह

आत्मा की खुराक

विकास क्रम नेचर का अद्भुत नियम है। इसके द्वारा विश्व के चारों जगतों में निरन्तर उच्च परिवर्तन आता है। विश्व के पदार्थों पेड़ पौधों, पशु - पक्षियों और मानव संसार के भीतर नये गुण वा योग्यताएं पनपती रहती हैं। इससे अध्ययन शील, विचारवान और खोजवान मनुष्यों के ज्ञान में नया इज़ाफा वा प्रगति होती रहती है। यही नया ज्ञान मनुष्य व और जगतों के विकास में सहायक होता है।

देव धर्म के परम पूजनीय बानी और संस्थापक विकास क्रम की अद्भुत देन हैं। उनकी हस्ती का और विशेषकर उनके भावात्मिक विकास का अध्ययन मनुष्य मात्र के लिए सर्वोत्म विषय है, जिसकी ओर मनुष्य की सीमित सेाच और समझ को, उसके अंह परिपूर्ण वृति और उसकी बढ़ती हुई योग्यता और सुख स्वादों के टशन उस ओर जाने नहीं देते। परम पू० भगवान देवात्मा ने धर्म या रूहानियत के क्षेत्र में नये ज्ञान का भण्डार खोला है, धर्म जगत का आश्चर्य्य जनक सांईसीकरण किया है और धर्म को, मनुष्यआत्मा को, धर्म के साधनों, पूज्य वा पूजा पाठ को, लोक परलोक को, मनुष्य जीवन के मुख्य लक्ष्य को बिल्कुल नवीन, आधुनिक और विज्ञान मूलक अर्थ प्रदान किए हैं। इन सब से लाभान्वित होना प्रत्येक मनुष्य का सौभाग्य है।

पहली बात तो यह है कि मनुष्य को आत्मा के अस्तित्व सम्बन्धी कोई ज्ञान नहीं था, वह या तो आत्मा को कल्पित परमात्मा या ब्रह्म का एक अंग समझता आ रहा है, या जो मनुष्य बहुत ज्ञानवान, विचारशील वा विज्ञान मूलक सोच रखते हैं, उन्होंने परमात्मा के अस्तित्व को कल्पित जानकर नकार दिया, उन्होंने आत्मा के अस्तित्व को भी नकार दिया है। इसलिए अथीसट या रब से मुन्कर, पोज़ीटिविस्ट, Rationlist और तर्कशील वर्गो के लोग आत्मा के अस्तित्व से ही मुन्कर हैं।

परम पू० भगवान देवात्मा ने फरमाया है कि नेचर का हर पदार्थ और आत्मा की हस्ती दो पदार्थों को लेकर बनी है, एक मैटर जो जड़ पदार्थ है, दूसरी का नाम शक्ति है। जैसे जड़ ठोस, हवाई, तरल और सूक्ष्म रूप रखती है, उसी प्रकार शक्ति भी दो प्रकार की है। अजीवित शक्ति जैसे, ताप, बिजली, चुम्बक आदि, जीवित शक्ति, पौधों, पशुओं और मनुष्यों की जीवनी शक्ति।

परम पू० भगवान देवात्मा ने मनुष्यात्मा की इस प्रकार परिभाषा की है। उन्होंने फरमाया है "कई प्रकार की शक्तियों (गठन प्राप्त) को लेकर बना, जो जीवित अस्तित्व मनुष्य के शरीर के भीतर वास करता है, वह मनुष्य का आत्मा है" इस प्रकार आत्मा कोई परमात्मा का अंश नहीं है, वह एक जिन्दा शक्ति मय जिन्दा अस्तित्व है।

आत्मा के नये अर्थ यह हैं कि यह निर्लेप नहीं, अमर नहीं, सदा रहने वाला नहीं, यह परिवर्तित होता है, यह कमज़ोर व बलवान होता है, यह जीता भी है और मर भी जाता है। मनुष्य के अस्तित्व में यह मुख्य, असल, सत्य और सार वस्तु है। इसके साथ मनुष्य की हस्ती है। यह है तो मनुष्य जीवित है, नहीं तो मुर्दा है।

कल्पित और अवैज्ञानिक धर्मो के लिए यह

एक अचम्भा ही है कि आत्मा की भी कोई खुराक हो सकती है। हां, जो नियम वा साधन आत्मा को जिन्दा रखते हैं, उसको बलवान बनाते हैं, उसको मृत्यु से बचाते हैं, वही आत्मा की खुराक हो सकते हैं। यह कल्पित धर्मो के लिए नई खोज है।

मनुष्य की जीवनी शक्ति या आत्मा को बलवान करने वाली दो बातें हैं, जो मनुष्य आत्मा की खुराक बनकर उसके लिए बलवर्द्धक और पौष्टिक सिद्ध होती हैं। पहली वस्तु है उच्च असर वा प्रभाव (Higher vibrations या higher influences) जिनका स्वरूप खुशबू जैसा कहा जा सकता है। जो उच्च जीवन धारी मनुष्यों के जीवनों से निकलते हैं, उनको प्रभाव कहते हैं। देवात्मा के देव जीवन के प्रभाव सर्वोच्च प्रभाव हैं, वह मनुष्य के लिए जान और प्राण की वस्तु हैं।

दूसरी चीज़ है दूसरे अस्तित्वों की सेवा या दूसरी हस्तियों के विकास में अमली सहयोग। मनुष्य के ऐसे कर्म जो अपने से निकलकर दूसरे अस्तित्वों का उत्थान करते हैं, उन कर्मो द्वारा मनुष्यात्मा को अति सुन्दर खुराक मिलती है।

इसलिए कहा गया है:-

"By building others, we build ourselves, By destroying others, we destroy ourselves."

अर्थ:- दूसरों को बनाने से हम बनते है, दूसरों की हानि करने से हम नष्ट होते हैं।

उक्त दोनों खुराकें, पदार्थ या कर्म मनुष्यात्मा की बहुमुल्य खुराक हैं।

उच्च असर, उच्च जनों अर्थात उच्च जीवन धारियों से ही प्राप्त हो सकते हैं, देव असर जो सर्वोच्च असर हैं अर्थात रूहानी रोशनी वा तेजमयी प्रभाव, परम पू० भगवान देवात्मा के साथ आत्मिक सम्बन्ध स्थापन करने के अटल नियमों के पूरा करने के योग्य होकर ही प्राप्त हो सकते हैं। या किसी मात्रा में उन जनों की संगत से, जिनका किसी अंश देव रूप के साथ आत्मिक सम्बन्ध स्थापन हुआ है। देवरूप तक या देव प्रभावों तक रसाई मनुष्यता की सर्वोच्च अध्यात्मिक उपलब्धि है। इस योग्य होना मनुष्य का सर्वोच्च सौभाग्य है, इसके साथ मनुष्य अमृत स्त्रोत के साथ जुड़ जाता है। अपनी योग्यतानुसार आवश्यक खुराक प्राप्त करने के योग्य बन जाता है।

दूसरी खुराक दूसरों की विशुद्ध सेवा के कर्म हैं। यह भी उच्च वा सात्विक भावधारी मनुष्य ही कर सकते हैं। सात्विक श्रद्धा, सात्विक कृतज्ञता, दया और हानिपरिशोध के भाव ज्यों ज्यों बढ़ते जाते हैं और बलवान होते हैं, वैसे वैसे वह मनुष्य को समर्पण के लिए तैयार करते हैं और विशुद्ध सेवा के लिए मजबूर करते हैं। उक्त सात्विक भावों के बीजों को लेकर जन्म लेना और उन्हे विकसित करने वाले वातावरण में उनका विकास करना और उन्हें बलवान करना मनुष्य जीवन का बड़ा सौभाग्य है। इन सुन्दर सात्विक भावों के बिना सच्चा परोपकार असम्भव है, जैसे चीनी और घी के बिना हलवा नहीं बन सकता।

इस विषय पर गुरू महाराज एक जगह पर फरमाते हैं:-

आत्मा का बल बढ़ने का अर्थ है, आत्मा की मुख्य वा मूल निर्माण कारी शक्ति के बल का बढ़ना। आत्मा के भीतर निर्माणकारी शक्ति ही मुख्य शक्ति है। यदि आत्मा अपने भीतर अपने रहने के लिए शरीर निर्माण का काम करने की पूर्ण सामर्थ्य रखती है, तो वह मौत के बाद अपना नया सूक्ष्म शरीर बनाकर जिन्दा रह सकती है, यदि वह

शक्ति शिथिल हो जाती है, तो निर्माण कारी शक्ति अपना बल खो बैठती है। वह कोई शरीर नहीं बना सकती, बिना सूक्ष्म शरीर के वह रह नहीं सकती, और नष्ट हो जाती है, इसलिए आत्मा की इस मुख्य शक्ति की खुराक भी विशुद्ध परसेवा ही है।

"आत्मा के भीतर यह निर्माणकारी (आत्मा की मुख्य शक्ति) शक्ति विशुद्ध परोपकार के भावों से वा दूसरों को बेहतर बनाने का काम करने से बढ़ती है। यदि यह बेहतरी का काम न किया जाए, तब यह घटती है। धीरे-धीरे पूर्णत: नष्ट हो जाती है। जैसे गेहूं के दाने यदि हम भून दें या मुर्गी के अण्डे हम उबाल दें, तब उनके भीतर की जीवनी शक्तियां मर जाएंगी। उसी प्रकार बिगाड़ने वाले काम करने से मनुष्य की निर्माणकारी शक्ति भी मर जाती है।

"अब तुम लोग यह देखो के तुम दिन भर में किस कदर ऐसी गतियां करते हो, जो बनाने वाली हैं, इसके विरुद्ध जो बिगाड़ने वाली गतियां हैं, वह तो होती रहती हैं। याद रखो! कि यदि तुम्हारे तन, मन और धन की शक्तियां नेचर के भिन्न अस्तित्वों के बनाने में खर्च नहीं होंगी, तो जीवन के विचार से तुम्हारा दिवाला निकल जाएगा। जैसे कोई मनुष्य रुपये खर्च करने का काम तो करता रहे, आमदन का कोई भी काम न करे, तो वह कुछ समय में दिवालिया बन जाता है, उसी प्रकार यदि कोई मनुष्य बनाने का काम तो कोई न करे और बिगाड़ने का काम बराबर करता रहे, तो वह कुछ समय में (आत्मिक लिहाज़ से) दिवालिया बन जाता है।

"तपेदिक का रोगी जी तीसरी (आखिरी अवस्था) मंजिल में पहुंच जाता है, तो उसका ईलाज असम्भव हो जाता है, उसी प्रकार जो आत्मा अपनी निर्माणकारी शक्ति को इस कदर विकृत बना लेता है फिर उसके द्वारा निर्माण का काम होना पूरी तरह बन्द हो जाता है, उसके आत्मा का बचना भी असम्भव हो जाता है।

"मनुष्य की यह निर्माणकारी शक्ति, किसी को बिना कारण दुख पहुंचाने या उसकी अनुचित हानि करने से घटती है और किसी अस्तित्व को पहले से बेहतर बनाने से बढ़ती है। यदि तुम्हारे आत्मा की ऐसी हालत हो चुकी है कि आप निर्माणकारी शक्ति बढ़ाने वाला कोई उच्च भाव भी अपने भीतर पैदा करने की सामर्थ्य खो चुके हो तो तुम जीवन दाता सत्य देव की शरण में आकर भी बच नहीं सकोगे।

"काश! कि जो आत्मा बचने की हालत में हैं, वह बच सकें और ऐसी हालत में जाने से पहले पहले बच सकें कि जिसमें पहुंचकर उनका बचना असम्भव हो जायेगा।

"आपका भला इसी में हैं कि तुम हररोज़ विशुद्ध भावों से दूसरों के लिए सेवाकारी बनकर अपने भीतर की निर्माणकारी शक्ति को बढ़ाओ और मछरों, खटमलों, पिस्सूओं की तरह स्वार्थी और हानिकारक रहकर नष्ट न होवो। आपके लिए यदि सम्भव हो तो तुम बेहतर बनो, दूसरों को बेहतर बनाओ। नेचर में तुम्हारे जीवन के बनने वा बिगड़ने का यही अटल नियम है कि तुम दूसरों को बेहतर बनाने से आप बेहतर बनोगे। काश! तुम इस नियम को देख सको और उसको देखकर बिगाड़ने वाले नियमों को पूरा करने से रुक सको और बनाने वाले नियमों को पूरा करने के अधिक से अधिक योग्य हो सको"

-बलदेव सिंह

दो प्रेरणादायक पत्र

आप का आश्रित जन रक्षक रूप

सम्पूर्ण जगत् के हित के लिये अद्वितीय महात्यागी और अद्वितीय जीवन व्रतधारी मेरे परम पूजनीय महा मान्य श्री देव गुरु भगवन्!

अति दीनता से आपकी चरण धूलि में सिर रखकर प्रणाम करता हूं।

भगवन्! आप का आश्रित जन रक्षक देव स्वभाव मेरे सामने बहुत ही स्पष्ट रूप में प्रगट होता जाता है। मेरा यह विश्वास भी दृढ़ होता जा रहा है कि जितने अंश में मैं आप का सच्चा आश्रित बनूंगा, उतने ही अंश आपका आश्रित जन रक्षक स्वभाव मेरे जीवन में अपना कार्य करेगा। यही विश्वास अपनी कई प्रकार की अयोग्यताओं को देख लेने पर भी मुझे निराश नहीं होने देता, और मुझे यक़ीन दिलाता है कि आप के सच्चे आश्रित बनने की योग्यता प्राप्त करने से ही मेरे सच्चे कल्याण का मार्ग खुल सकेगा।

मेरे परमाश्रय देव! आप के इस आश्रित जन रक्षक रूप के कार्य का परिचय मैं अपने जीवन में पाता रहता हूं। इसीलिए मेरा उपरोक्त विश्वास धीरे 2 दृढ़ हो रहा है। साधारण रूप से सर्वदा ही मेरा हित करते रहने के भिन्न जब कभी मेरे भीतर कोई अध्यात्मिक संग्राम आरम्भ होता है, तब आप उसे मेरी ज़बानी या मेरी आकृति आदि से जान कर अपनी आश्रित जन रक्षक प्रकृति के अनुसार उस संग्राम में एक वा दूसरे प्रकार से मेरी सहाय करते हैं। जब मेरे आत्मा में कोई विकार उत्पन्न होने लगता है, कि जिसका मुझे पता तक नहीं होता, और आप उसे देख लेते हैं, तब गाढ़ हित भाव से भर कर उस से बचाने का जो यत्न करते हैं, उसे देखकर मैं अपने आपको आप का ऋणी अनुभव करके जहां आप को हृदय से धन्यवाद देने लगता हूं, वहां मुझे अपने भी बहुत बड़े सौभाग्य अनुभव होते हैं। ऐसे समयों में मैंने आपके आश्रित जन रक्षक रूप की बहुत ही महान महिमा के दर्शन करने का अधिकार पाया है और मैंने आपको अपने सच्चे शिक्षक, रक्षक, परित्राता और विकास कर्ता सम्बन्धी अनुभव किया है।

महा यज्ञ से पहले ही आपने मुझे अपनी जीवन ज्योति का दान देकर मेरे भीतर गुप्त रूप से बढ़ रहे अहंकार को दिखाने की जो कृपा की है, उससे मुझे महा यज्ञ सम्बन्धी साधनों में दीनता के भाव को बढ़ाने में बहुत बड़ी सहाय मिली है। उस समय मैंने ऐसा अनुभव किया कि कीड़ी का दान कण और हाथी का दान मण होता है। मैं अन्य बड़ों की सौ सभाओं में योग देकर भी शायद महा यज्ञ के लिए उतना दान न पा सकता कि जितना चन्द मिन्टों में आप के श्री चरणों से पाया है।

भगवन्! मेरा हृदय सर्वदा आप का सच्चा आश्रित बन कर आप के अमूल्यदान को पाने का अधिकारी रहे। मुझे ऐसी संगत और ऐसे सामान मिलें कि जो मुझे दीन रखकर अधिक से अधिक आप का महा कल्याणकारी आर्शीवाद पाने और आपके निकट होने में सहाय हों। ऐसा हो, ऐसा हो।

आपका दीन दास - परमेश्वर दत्त

- - - -

भगवान् का गुरु अनुराग

मेरे भगवन्!

आज के साधन में आप की महिमा को सन्मुख लाते समय आपके गुरू अनुराग ने विशेष रूप से मेरे हृदय को मोहित किया है। ऋषि जी का दर्शन करने के साथ हि आपके हृदय का उनकी ओर खिंच जाना, थोड़े काल के अनन्तर अपनी धर्म पत्नी समेत उनके शिष्य बन जाना, उनके बताए हुए साधनों को गहरी निष्ठा के साथ पूरे करना, उनके पास रहने में सच्चा आराम और उनकी जुदाई में बहुत दुःख अनुभव करना, उनसे जुदा रह कर जो कुछ दुनिया के लाभ

प्राप्त होते हों, उनसे आपके हृदय का तृप्त न होना, और मुड़ २ कर उन्हीं के श्री चरणों में पहुंच कर आराम बोध करना, उनके बिमार हो जाने पर निहायत दुःखी होना, और अपने सन्मुख बहुत गहरा अन्धेरा देखना, पूरे प्रेम और उत्साह के साथ उनकी सुश्रूषा करना, उनकी सेवा के लिये अपने आपको जितना भुलाना आवश्यक हो, जितना अपने ऊपर कष्ट लेना ज़रूरी हो, उस सब को दिली प्रसन्नता के साथ स्वीकार करना, उनके देह त्याग से बहुत सख़्त आघात अनुभव करना, और रुड़की से उनके उठ जाने के अनन्तर फिर उस स्थान में अपने लिए कोई वस्तु आकर्षणीय प्रतीत न करना, उनकी जुदाई से बहुत उदास और दुःखी होना, और उनके देह त्याग के अनन्तर भी उनके साथ अपने रिश्ते को गहरे से गहरा और हितकर से हितकर बनाने का बराबर यत्न करना, और सर्वथा उन्हें अपने हृदय में उचित स्थान देना यह सब ऐसे दृश्य हैं कि जो इस समय मेरे सन्मुख प्रगट होकर जहां ऋषि जी चरणों से मुझे झुका रहे हैं, वहां आपकी गुरू अनुराग सम्बन्धी अद्वितीय महिमा को विशेष रूप से प्रकाशित कर रहे हैं, और आपके हित बहुत गहरे श्रद्धा के भाव को उदय कर रहे हैं। हे देव! आप धन्य हैं आप धन्य हैं। आपके जीवन के जिस अंग को देखा जाए, वही बहुत सुन्दर और अद्वितीय दिखाई देता है। भगवन्! मेरी आप से यही बिनती है, कि मेरे भीतर भी किसी प्रकार वह गुरु अनुराग उत्पन्न हो जो आपके भीतर विराजमान है। मेरा हृदय गुरु अनुराग के बिना कौडी काम का नहीं। मेरे लिए आपके साथ प्रीति से बन्धने के बिना कहीं ठिकाना नहीं। आपके अनुराग में हि मेरी सच्ची जान और मेरे आत्मा के सच्चे प्राण हैं। आपको भूल कर संसार में मुझे जो कुछ मिलता है, उसका मुझे काफी से बढ़कर तजरबा हो चुका है। मेरा दिल आप से परे जाना नहीं चाहता, परन्तु हाय! प्रतिकूल हालात में पड़ कर और दुर्बलता के वश होकर मैं आपसे परे चला जाता हूं। ऐसा हो कि किसी प्रकार मेरा हृदय इस दर्जे आप के साथ प्रीति सूत्र में बन्ध जाए, कि वह प्रतिकूल हालात में भी आप की हि ओर सब से बढ़कर आकृष्ट हो सके। प्रत्येक सुख और दुःख की घटना में मुझे और चाहे सब कुछ भूल जाए, परन्तु मैं आपको किसी तरह न भूल सकूं, और जब तक यह वजूद इस लोक वा किसी और लोक में वर्तमान रहे आपके विशुद्ध अनुराग की बराबर साक्षी देता रहे।

आपके गुरू अनुराग का आकांक्षी
तुच्छ सेवक, धर्म्म बल।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : - श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

माता - पिता सन्तान का सम्बन्ध

सर्वप्रथम हमें माता - पिता से जो गुणों की विरासत मिलती है, वह सबसे बड़ा वरदान है। कई बच्चों को हम देखते हैं कि उन्हें माता - पिता दोनों के गुण जब अधिक मात्रा में मिल जाते हैं, तो उनका व्यक्तित्त्व निख़र जाता है। 'मां' के शब्द के उच्चारण से ही मुँह रसमय हो जाता है। इस शब्द में जो जादू है उसको महसूस किया जा सकता है, समझा नहीं जा सकता। बहुत नसीब वाले होते हैं वह बच्चे जिनके मां बाप लम्बी उमर तक साथ होते हैं। जब तक मां बाप हैं, बच्चे उनके लिए बच्चे रहते हैं। पिछले दिनों बेटे का जन्मदिन था, तो बधाई देने पर उसने कहा कि मां अब तो जल्दी मैं सीनियर सिटीजन हो जाऊंगा। मैंने कहां बेटा, मेरे लिए तो सदा ही बच्चा है। यह सब माता - पिता को लगता है। पर माता - पिता की कदर और सेवा करने वाले बहुत कम होते हैं। जब यह खबरें पढ़ते हैं कि मां - बाप को जायदाद के लिए कत्ल कर दिया या उन्हें घर से निकाल दिया या उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है, तो दिल दहल जाता। कितने अभागे हैं वह बच्चे जो माता - पिता की सेवाओं और कुर्बानियों को भूलकर उनका अनादर करते हैं मां की थपकी, पिता का सीने से लगाना, उनका आर्शीवाद नेयमत है, जो इसे पा लेते हैं, तो उनकी सन्तान भी उन्हीं के पद - चिन्हों पर चलती है और घर स्वर्ग बना रहता है।

छोटे बच्चे मां की गोद में अपनी सुरक्षा देखते हैं, जरा मां आंखों से ओझल हो जाए तो व्याकुल हो जाते हैं। पर ज्यों ज्यों बच्चे बड़े होते जाते हैं, कमाने खाने के योग्य हो जाते हैं, तो माता पिता की अवहेलना करने लगते हैं, साधारणत: वह सब कुर्बानियां भूल जाते हैं, जो आज वह अपने बच्चों के लिए कर रहे हैं।

पिता इस कठोर संसार में मुश्किलों का सामना करना सिखाते हैं, बच्चों को मेहनत, लगन का पाठ पढ़ाते हैं। ज़िन्दगी के उतार चढ़ाव से कैसे गुजरना है, वह सिखाते हैं। पिता ऐसा स्तम्भ है जो बच्चों की कठिनाईयों में मज़बूती से खड़ा रहना भी सिखाते है।

मैंने एक पिता की कहानी पढ़ी, जो बेटे के पास कुछ दिन दिवाली के दिनों में रहने के लिए आया था। दिवाली की शॉपिंग के लिए पत्नी और बच्चों ने अपनी लिस्ट थमा दी तो पिता से पूछा कि आप भी लिखकर दे दें तो उन्होंने एक कागज़ पर लिखकर बेटे को थमा दिया, वह जेब में डालकर चला गया। उसकी पत्नी जल भुन रही थी कि पता नहीं क्या कुछ लिखा होगा। जब सारी शापिंग ख़त्म हुई तो बेटे ने पिता का कागज़ निकाला और पढ़कर कार खड़ी करके रोने लगा, तो पत्नी ने घबराकर पूछा कि क्या हो गया? उसने पेपर उसको दे दिया, जिस पर लिखा था कि "बेटा मुझे कुछ नहीं चाहिए, मुझे तुम्हारा समय चाहिए, क्यांकि मैं बहुत अकेला महसूस करता हूं।" पत्नी का दिल भी यह पढ़कर पिघल गया।

एक सीनियर डाक्टर ने एक प्रोग्राम में बताया कि एक लड़के का लिवर खराब हो गया था, उसके लिए लिवर का कुछ भाग चाहिए था। डाक्टर के कहने पर कोई आगे नहीं आया, उसकी मां रो रोकर प्रार्थना करने लगी, मेरे बेटे को बचा लो। वह मां जो कई वर्षों से बेटे से अलग रह रही थी। जब बेटे को पता लगा, तो वह शर्मिंदगी से सिर झुका कर बैठ गया।

एक और अर्धपगली मां की कहानी है, जो

प्लेटफार्म पर ही रहती थी, पता नहीं उसके साथ किसने कुकर्म किया कि वह गर्भ से हो गई। उसके पास न खाने को न पहनने को। एक दयावान स्त्री एक चाय वाले के पास खड़ी चाय पी रही थी, तो वह पगली सी औरत पास आई और कहने लगी, मुझे अपने बच्चे के लिए दूध चाहिए, तो उस भद्र स्त्री ने 20 रुपये निकाल कर चाय वाले को कहा कि उसे दूध दे दो, तो आधी पगली मां कहने लगी बच्चा छोटा है, यह इतना दूध एक दम से नहीं पी सकेगा, इस चाय वाले को कह दो कि हर 2 घण्टे बाद मुझे थोड़ा 2 दूध दे दें। यह है मां की कुब्रानी, आप भूखी रहकर बच्चे की भूख के लिए व्याकुल है। उस अबोधी बच्चे को क्या पता है कि उसकी मां अपना पेट काटकर उसको जीवित रख रही है।

बच्चे माता पिता के लिए जितना भी कर लें, कम हैं, परन्तु कुछ बातें तो ज़रूर करें :-

पहला :- हर सप्ताह कुछ घण्टे माता पिता के साथ धैर्य से बैठकर उनकी बातें सुनें। उनके साथ हंसी मजाक करें। उनको आपके उपहार से खुशी नहीं मिलती, परन्तु आपके साथ की ज़रूरत है। अपनी बातचीत के वक्त अपना मोबाईल ज़रूर बन्द रखें।

दूसरा :- साल में एक बार अपने माता-पिता के साथ घूमने अवश्य जाएं, उनकी पसंद की जगह। याद कीजिए आपकी खुशी के लिए वह कहां कहां घुमाने ले जाते थे। बेशक भीड़ भाड़ वाली जगह उन्हें पसन्द न भी हो। आपको खेलने, कभी स्केटिंग, कभी पार्क में ले गए। तुम्हें साईकल सिखाने के लिए पीछे दौड़ते थे। आपके बार 2 प्रश्न पूछने पर भी वह नहीं घबराते थे, उतनी बार वही जवाब देते थे। उन्होंने हर वह काम किया, जिसमें आपको खुशी मिलती हो। अब आपकी बारी है, बिज़नेस, कैरियर ही सब कुछ नहीं। ज़िन्दगी में सन्तुलन बनाईए।

तीसरा :- माता-पिता को उनकी पसंद का कम से कम प्रतिवर्ष उपहार अवश्य दें। बेशक उनके पास सब कुछ हो, उन्हें सरप्राईज़ दें। बच्चों पर इतना प्रतिदिन खर्च होता है, माता पिता के लिए खर्च करने में अपना बजट का मत सोचिए। बजट में उनका भी हिस्सा रखिए। इससे आपकी सन्तान को भी अच्छे संस्कार मिलेंगे।

चौथा :- कई बार माता पिता कुछ दान करना चाहते हैं, उनके पास इतने साधन नहीं। उसके लिए छोटा सा फंड रख सकते हैं। जिसे वह अपनी मर्जी से दान करें, उस पर सवाल न करें, नहीं तो उनके आत्म सन्मान को ठेस पहुँचेगी।

पाँचवा :- कभी माता-पिता का अनादर न करने का संकल्प लें। जैनरेशन गैप कहकर कई बार बच्चे बड़ों का अनादर करते हैं। आपको असहमत होने का अधिकार है, परन्तु अपमान करने का नहीं। यदि जीवन में आपसे कोई पूछे कि आप जिस मुकाम पर हो, आपने जो उपलब्धि हासिल की है, उसके पीछे कौन है, तो फख़्र से कहिए, यह माता की मेहनत का फल है, उनका आर्शीवाद है।

गुरू महाराज के हम सेवक बड़े सौभाग्यवान हैं, जिन्हें माता-पिता-सन्तान के सम्बन्ध में कर्तव्य कर्मों और वर्जित कर्मों की शिक्षा मिली है। जिनकी कुछ अंश तक पालना करने से ही हमारे घर स्वर्ग बने हुए हैं। यह ऐसा महा-उपकार है कि जिसका ऋण हम उतार ही नहीं सकते, क्योंकि ऐसी नादर शिक्षा कहीं और नहीं मिलती। काश! हम उनकी शिक्षा के अनुसार इस सम्बन्ध को दिन पर दिन और बेहतर बना सकें।

-सुरजीत बराड़

हम कैसे माता - पिता है?

पूजनीय भगवान् की सम्बन्ध - तत्त्व की शिक्षा मनुष्य - मात्र पर और उपकारों के भिन्न बहुत बड़ा उपकार है। बेशक, हम उनके सेवक होकर भी इन सब सम्बन्धों में सब आदेश पालन करने में असमर्थ्य हैं, परन्तु अपनी - अपनी योग्यता के अनुसार हमारे सम्बन्धों में जो बेहतरी आई है, वह हमें इस विश्व में स्वर्ग का अनुभव देती है।

पूजनीय भगवान् के पावन शिक्षा ने जो कुमहलाए हुए हृदयों की सरस करती है, उसी सरसता को लिए हुए हमने नए वर्ष में प्रवेश किया है। नए वर्ष का आरम्भ उस सम्बन्ध से हुआ , जिससे हम सब का आगाज हुआ है। यह सम्बन्ध है माता - पिता का सम्बन्ध। बहुत अमीर होकर, बहुत योग्यताएं रखकर और विद्वान् होकर भी एक एक जन इस सम्बन्ध में घोर - अबोधता का प्रदर्शन करके माता - पिता के लिए किस कदर दुखदाई बना हुआ है, ऐसी उदाहरणें प्राय: घर - घर में मिलती हैं। परन्तु पूजनीय भगवान् की अपार - कृपा से इस सम्बन्ध में देव समाज के परिवारों में सन्तोष - जनक सुधार हुआ है और अधिकांश माता - पिता सुख का सांस ले रहे हैं।

पूजनीय भगवान् सर्व - हितकर्ता हैं। उन्होंने माता - पिता दिवस नहीं, बल्कि माता - पिता - सन्तान दिवस के रूप में मनाने के आदेश दिए हैं। माता - पिता के उपकारों और उनकी सेवाओं की ओर अक्सर हमारा ध्यान जाता है, परन्तु सन्तान के प्रति हमारे क्या कर्त्तव्य हैं, उन कर्त्तव्यों को हम कहां तक पूरा कर पा रहे हैं। इसकी तरफ बहुत सोच - विचार नहीं जाती है। पूजनीय भगवान् जो स्वयं न केवल आदर्श - पुत्र थे, वह आदर्श - पिता भी थे। उन्होंने सन्तान के सम्बन्ध में भी हमें आदेश दिए हैं, जिनका अध्ययन और पालन भी उतना ही आवश्यक है, जितना माता - पिता के सम्बन्ध में।

सन्तान को केवल जन्म दे देना, उनके लिए सुख - सुविधाएं जुटा देना और उनको ऊंची शिक्षा दे देना ही माता - पिता का कर्त्तव्य नहीं, बल्कि बच्चों की पालना करने में उनकी कोमल - भावनाओं को ठेस न पहुंचाना, उनको नैतिक - मूल्य मनोविज्ञानिक - ढंग से सिखाना, अपने मूल्यों को उन पर थोपना नहीं, बल्कि उनकी रुचियों को अच्छी तरह जानना, यह बहुत बड़ा विज्ञान है। माता - पिता तो सभी बन जाते हैं, परन्तु बच्चों के मनोविज्ञान का अध्ययन बहुत कम माता - पिता करते हैं।

माता मन्टेसरी ने इस क्षेत्र में अनोखा आन्दोलन चलाया था। इनको इन्क़लावी मुक्ति - दाता कहा जाता है। उनके अनुभव में तो प्रत्येक माता - पिता भिन्न - भिन्न प्रकार से बच्चों पर अत्याचार करते हें। वैसे हम सब अपना यह दावा करते हैं, कि हम बच्चों को अपनी जान से भी बढ़ कर प्यार करते है। अपना पेट काट कर बच्चों की माता - पिता पालना करते हैं, फिर हम अपने बच्चों पर कैसे अत्याचार कर सकते हैं। हमारा मोह - अनुराग हमारे से कुर्बानी तो ज़रूर करवाता है, परन्तु बच्चों की कोमल - भावनाओं को हम समझ नहीं पाते।

माता मन्टेसरी ने तो यहां तक लिखा है कि मनुष्य की जिस प्रकृति ने गुलामों व स्त्रियों पर अत्याचार किए, वही हिंसक - प्रकृति का प्रदर्शन मनुष्य बच्चों पर करता है। जैसे प्रत्येक निरंकुश राजा अपने - आपको प्रजा का हितकारी बताता है, वैसे ही अनुभव - हीन प्रत्येक माता - पिता बच्चों पर अत्याचार करते हुए भी अपने - आपको उनका हितकर्ता समझते

हैं। उनका अहं, अपने दोष उन्हें देखने नहीं देता। निम्न - लिखित बातों पर विचार करके हम देख सकते हैं। कि हम कैसे माता - पिता हैं: -

1) माता - पिता, अपने व्यवसाय, अपने घरेलु कामों में इतने व्यस्त होते हैं। उन कामों को उनके सामने इतना महत्त्व होता है कि वह नन्हा बच्चा जो काम करना चाहता है और उससे उसकी जो सन्तुष्टि होती है, उसको अनुभव नहीं कर सकते। वह अपने हाथ से खाना चाहता है, पानी व दूध पीना चाहता है। वह हर वस्तु को छूकर देखना चाहता है। इस तरह के काम ही बच्चे के काम है, यह सब उसके विकास की गतियां हैं, माता - पिता महंगे खिलौने लाकर अपने अंह की तृप्ति तो कर लेते हैं, परन्तु जब बच्चा उसको खेलना चाहता है और तोड़ता है, तो उस नन्हें से फ़रिश्ते की शामत आ जाती है। बच्चे के लिए टूटी - फूटी चीजें भी खिलौने हैं, क्योंकि उनके वह अपनी इच्छा से खेल तो सकता है। माता - पिता समय के अभाव के कारण, या किसी वस्तु के टूटने के डर से या बच्चों के कपड़े ग़न्दे होने के डर से, बच्चे की नन्हीं - नन्हीं इच्छाओं को बड़ी बेरहमी से दबा देते हैं। जब बच्चा किसी काम को स्वयं करना चाहता है, कोई बार मां थप्पड़ लगाकर वह काम खुद कर देती हैं, वह बेचारा हार मानकर चुप हो जाता है। बच्चा बहुत संवेदन - शील होता है। माता मन्टेसरी ने तो बच्चों को "दुख - भोगी मसीहा" कहा है।

2) बच्चा दिल का साफ़ होता है। जब हम किसी बात का डर उसके दिमाग में डाल देते हैं, तो वह डर के मारे झुठ बोलना आरम्भ कर देता है। बच्चों को बहलाने के लिए माता - पिता झूठ मार कर, उसको ग़लत सुझाव देकर उसके व्यक्तित्व के सही विकास में बाधक बनते हैं। बच्चे का एक अलग व्यक्तित्व है। परन्तु माता - पिता अक्सर अपने आदर्शों को उस पर थोपकर उसको कुचलने का काम करते हैं। यदि बच्चा उन आदर्शों पर न चल सके तो कई बार उसको अपने घर से निकालने का डर देते हैं, उसको बुरा भला कहते हैं। इससे बढ़कर और क्या ज़्यादती हो सकती है।

3) माता - पिता बच्चों को शारीरिक - दण्ड देते हैं। यह और बड़ा अत्याचार है। पिता अपने काम से थक कर आता है पर अपने अफसर से दुखी है, माता अपनी व्यस्तता और कमज़ोर सेहत से बेबस है, तो सारा गुस्सा नन्हें बच्चे पर निकलता है। बच्चे की असहाय अवस्था माता - पिता के इस गुस्से पर रोक तो नहीं लगा सकती, परन्तु उसको कुंठित कर देती है। अक्सर बच्चे को यह पता ही नहीं होता कि उसकी ग़लती क्या है। कई बार उसी क्रिया पर माता - पिता उस को हंस कर या शाबाश देकर प्रोत्साहित करते हैं। परन्तु कभी उसी बात पर बच्चे को डांटते हैं, क्योंकि बच्चे को दण्ड - दाता और न्याय - कर्ता स्वयं माता - पिता ही हैं। कई बार बच्चों को अन्धेरे कमरे में बन्द कर दिया जाता है। कई बार उनका खाना बन्द कर दिया जाता है, खेलना बन्द कर दिया जाता है। माता - पिता अपने अंह के अधीन अपने बनाए हुए अनुशासन में बच्चे को बांधना चाहते हैं और उसे उचित ठहराते हैं। ऐसा कठोर अनुशासन बच्चे को अनुशासन - हीन बना देता है। यह उसके विकास में बेहद बाधक है। माता - पिता का ऐसा बर्ताव बच्चे को भीरु, झूठा और उदण्ड बना देता है।

4) बच्चा केवल शरीर नहीं, उसका दिमाग़ और उसकी परिचालक - शक्तियां भी हैं। माता - पिता अपना कर्त्तव्य बच्चे को अच्छा खाना - पीना और अच्छे कपड़े देने तक ही सीमित रखते हैं। कुछ माता - पिता उच्च - विद्या भी देना चाहते हैं, परन्तु उसमें बच्चे को पूर्ण सहयोग नहीं देते। अच्छा परिणाम न आने पर डांट - डपट भी करते हैं, परन्तु बच्चे की

मानसिक - शक्तियों के विकास के लिए घर का वातावरण नहीं दे सकते।

इससे भी बढ़कर उसके भावात्मिक विकास के लिए सहयोगी होना तो बहुत दूर की बात है। बच्चा बहुत जिज्ञासु होता है। उसको सन्तुष्ट करने के लिए माता - पिता के पास न समय है और न धैर्य। बच्चे जितने अधिक संवेदन - शील और भावात्मिक होते हैं, उतना ही अधिक वह माता - पिता की निकटता और मित्रता चाहते हैं। साधारण बुद्धि वाले बच्चों की पालना इतना कठिन नहीं परन्तु दिल व दिमाग़ की असाधारण योग्यता रखने वाले बच्चों की पालना बहुत कठिन है। माता - पिता उनके अनुकुल वातावरण नहीं दे पाते, तो उनमें असमाजिक' तत्वों के विकसित होने की अधिक सम्भावना है।

5) बच्चे में कोई बुराई पनपने से, उसके साथ सहानभूति होने के स्थान पर अक्सर माता - पिता बच्चे को डांट - फ़िटकार डालने लगते हैं। दूसरे बच्चों से उसका मुकाबला करके उसके अंह पर बार - बार चोट करते हैं। बच्चे के रोगी होने पर उन्हें यह डर नहीं होता कि लोग क्या कहेंगे, परन्तु उसकी बुराई जो उसका भावात्मिक - रोग है, उसको लेकर वह उसे स्वयं भी घृणा करते हैं और यह सोचकर कि लोग क्या कहेंगे, बच्चे से दुर्व्यवहार करते हैं। बच्चे का मनोविज्ञान समझने के लिए उनके पास समय नहीं होता।

6) माता - पिता का स्वयं का व्यवहार बच्चों के लिये आदर्श होता है। यदि माता - पिता झूठ बोलते हैं, बेईमानी करते हैं किसी को धोखा देकर उसकी शेखी बघारते हैं उन्होंने अपने माता - पिता को घर के एक कोने में फेंका हुआ है, तो बच्चे भी उस रूप में ढलते जाते हैं। ऐसे माता - पिता अपने बच्चों से भी सम्मान, स्नेह व सेवा की आशा नहीं कर सकते।

7) बच्चे कई बार आसाधरण गुण रखते हैं। कईयों की बुद्धि तीक्ष्ण होती है, कईयों के भीतर संग्राम करने की अधिक शक्ति होती है और भी कई गुण होते हैं जिनकी माता - पिता अक्सर प्रशंसा न करके, बच्चों की कमियों की तरफ़ ज़्यादा ध्यान देते हैं। उनकी किसी विशेष - उपलब्धि पर उन्हें प्रोत्साहित न करके अक्सर यह कहते हैं कि "इस बात को लेकर अकड़ते हो, फलां अपनी कमज़ोरी देखो" यह बहुत ग़लत दृष्टिकोण है। बच्चे की किसी भी उपलब्धि की उस समय भरपूर प्रशंसा करके, किसी और समय में उसकी ग़लती को बता सकते हैं। इस तरह बच्चा सुनने के योग्य बन जाता है। छोटी - छोटी बातों की आलोचना उसे माता - पिता से दूर करती जाती है।

जैसे बच्चों के लिए आवश्यक है कि वह माता - पिता के उपकारों और सेवाओं को याद रखें। आखिर वह उनके रचना - कर्ता हैं, उन्होंने अपनी योग्यता के अनुसार बच्चों की रक्षा, पालना और शिक्षा दी है। परन्तु इसके साथ - साथ माता - पिता को भी चाहिए कि वह बाल - मनोविज्ञान का अध्ययन करें, बच्चे की योग्यताओं के अनुकुल वातावरण प्रदान करें। बच्चे की दूसरे से तुलना न करके उसके स्वयं के व्यक्तित्व को विकसित करें।

पूजनीय भगवान् ने इस पहलू में जो आदर्श रूप दिखाया है, उसका अध्ययन भी अति आवश्यक है। पूजनीय भगवान् अपने एक - एक बच्चे के भले के लिये जिस क़दर तड़पे हैं, शुभ - कामनाएं की है। उनको हर प्रकार से विकसित करने में सहयोग दिया है, उस का अनुमान हम माता - पिता क्या कर सकते हैं। वह गुरु होकर प्रति बच्चों के लिये लिखित - आदेश छोड़ गए हैं। उनका पाठ करके हम उस आइने में देख सकते हैं कि हम कैसे माता - पिता हैं?

सुरजीत बराड़

मां की याद.....

अजनबी शहर में अपने घर की बहुत याद आती है,

दुनिया की भीड़ में 'मेरी मां'
बहुत याद आती है।

मुश्किलों के इस सफर की तेज़ धूप में,
जब तन-मन झुलसने लगता है,
तेरे आंचल की वो सुरमई छांव
बहुत याद आती है।
दुनिया की भीड़ में 'मेरी मां'
बहुत याद आती है।

पराए देश में अपने हाथों के बने
कच्चे-पक्के खाने में
जब आधे पेट सोना पड़ता है,
तेरे हाथों की बनी 'कढ़ी'
बहुत याद आती है।
दुनिया की भीड़ में 'मेरी मां'
बहुत याद आती है।

काम के तनाव में जब रातों को
नींद नहीं आती है,
मेरे बालों की वो तेल-मालिश और
तेरे हाथों की वो 'नर्म थपकियां'
बहुत याद आती हैं।
दुनिया की भीड़ में 'मेरी मां'
बहुत याद आती है।

दुनिया का झूठ, परायों के कठोर शब्द
जब मन को दुःख पहुंचाते हैं,
तेरी बातों की 'वो सांत्वनाएं'
बहुत याद आती है।
दुनिया की भीड़ में 'मेरी मां'
बहुत याद आती है।

चलते-चलते इस सफर में घन घोर अन्धेरा,
जब हौसला तोड़ने लगता है,
राह दिखाती तेरे प्यार की रोशनी
बहुत याद आती है
दुनिया की भीड़ में 'मेरी मां'
बहुत याद आती है।

अजनबी शहर में अपने घर की
बहुत याद आती है
दुनिया की भीड़ में 'मेरी मां'
बहुत याद आती है।

मां कहेंगी नहीं, लेकिन उन्हें आपसे समय, सम्मान और सहयोग चाहिए

मां को समय दीजिए, यही उनके लिए सबसे बड़ा सुख

मां के लिए सारे सुख उसके परिवार से ही जुड़े हैं। आज पूरे परिवार को बुलाकर मां के साथ एक अच्छा और लंबा वक्त बिताइए। क्योंकि परिवार के साथ गुजारे ये पल मां को बहुत सुख देंगे।

मां के साथ अपने पुराने फोटो एलबम देखिए और यादों को ताजा कीजिए। क्योंकि मां का मां होना, आपके बचपन में समाया है, उन तस्वीरों को देखकर वह अभिभूत होंगी।

कुछ समय सिर्फ आप और आपकी मां चाहें तो साथ मंदिर या शॉपिंग जाएं। या कुछ ऐसा करें जो मां को पसंद हो। क्योंकि और दिनों में मां का पूरा समय आपका होता है, आज आपका समय मां के लिए हो।

मां का सम्मान कीजिए, यही उनके लिए सबसे बड़ा सुकून

आज मां के साथ कुछ तस्वीरें खिंचवाएं और उसकी फोटो स्टोरी बनाकर परिवार वालों और मित्रों से सांझा करें। क्योंकि इससे मां को आत्मिक सुकून मिलेगा। मां की छवि का यूं परिजनों में जाना उन्हें सम्मानित महसूस कराएगा।

मां के बचपन के किसी शौक को फिर जिंदा कीजिए। कुछ ऐसा उपहार दीजिए जो उन्हें उस शौक की ओर दोबारा ले जाए। क्योंकि बच्चों के शौक के आगे मां अपने हर शौक कुर्बान करती जाती है। आज उन्हें पुरानी डगर पर ले जाकर संतान होने का फर्ज निभाइए।

आज अपनी मां की शाम यादगार बनाइए और मां को स्पेशल महसूस कराइए। क्योंकि मां खुद को खास मानना अक्सर भूल जाती है।

मां का सहयोग करिए, यही उनके लिए सबसे बड़ा संबल

कामकाजी मां के लिए टेक्नॉलजी जानना जरूरी है। आज उनको ऐसी टेक्नॉलोजी के गुर सिखाएं जो उनके लिए मददगार हों। क्योंकि इससे मां और सक्षम होगी और आगे बढ़ने का उन्हें नया जरिया मिलेगा।

मां घर के जिस काम को लंबे समय से करना चाह रही हों उसे आप कर दें, फिर वो चाहे घर की साफ-सफाई हो या बाजार की खरीददारी। क्योंकि ये उन्हें आराम देगा, बस आराम ही तो उन्हें मुश्किल से मिलता है।

आज मां के स्वास्थ्य के प्रति सजगता दिखाएं। उन्हें हेल्थ चेकअप की योजना बनाकर दें। क्योंकि मां तो अपनी सेहत के बारे में नहीं सोचतीं, आपको ही करना है।

अमरीका के एक विचारशील जन का स्वप्न किस तरह पूरा हुआ?

शायद सन् १८८८ ई० में अमरीका के एक बहुत बड़े विचारशील जन ने एक पुस्तक लिखी थी, कि जिस का नाम "परोपकारियों की बादशाहत" था। भूमिका में उसने लिखा था, कि जिन विचारों का इस पुस्तक में वर्णन किया गया है, उन्हें शायद एक या दो सदी के बाद इन्सानियत समझ सके। वह ईश्वर के विश्वास को त्याग चुके थे। प्रचलित मतों के खोखलेपन को उन्होंने अच्छी तरह से प्रगट किया था और मनुष्य प्रकृति का अध्ययन करते हुए उन्होंने लिखा था, कि लाखों और करोड़ें मनुष्यों के हृदय में जो शक्तियां पैदा हो चुकी हैं, वह शक्तियां ऐसे जनों के जीवन में अन्याय और अपहरण का कार्य करा रही हैं। और जब तब मनुष्य का हृदय ऐसी शक्तियों के अधिकार में रहेगा, तब तक अपहरण और अन्याय का कार्य जारी रहेगा। और मनुष्य जगत् में अनमेल भी अवश्य वर्तमान रहेगा। अब यदि मनुष्य मात्र में कोई उच्च परिवर्तन उत्पन्न करना है, तो यह ज़रूरी है, कि मनुष्यों के हृदयों में ऐसे उच्च बोध शक्ति रूप में उत्पन्न किए जावें, कि जो उन्हें विवश एक दूसरे के हित में लगा दें। इस के भिन्न उन्होंने यह भी लिखा था, कि मैं ऐसा भी अनुभव करता हूं, कि मनुष्य जगत् के विकास क्रम में एक ऐसा आविर्भाव होगा, जो अपनी ज्योति और शक्ति पहुंचाकर इस पाप भरी दुनिया में पापी जनों के हृदयों में ऐसा उच्च परिवर्तन लावेगा, कि वह एक ओर जानबूझ कर किसी की भी हानि करने के अयोग्य हों जाएंगे। और दूसरी ओर जहां तक भी सम्भव होगा, वह कुछ न कुछ दूसरों की सेवा में लग जाएंगे। यह इस नेक जन का स्वप्न नेचर की अपनी गुप्त विधि के अनुसार पूरा हो चुका था और पूरा हो रहा है। ऐसा अद्वितीय और पूर्णत: अनोखा आर्विभाव हो चुका है, कि जो अपनी ज्योति और शक्ति से अधिकारी मनुष्यों में उच्च परिवर्तन ला रहा है। हमें इस प्रकार के उच्च परिवर्तन की असलियत को भी समझने की कोशिश करनी चाहिए। मनोविज्ञान के पण्डित कुछ न कुछ बोध करते जाते हैं, कि जब तक किसी मनुष्य के भीतर उच्च भाव उस के आत्मा का अङ्ग न बन जाएं और शक्ति रूप लाभ न करें, तब तक ऐसा जन उच्च जीवन धारी नहीं बनेगा। थोड़ी या अधिक परोपकार की लहर अनुभव करना या किसी न किसी समय एक या दूसरी प्रकार का कोई परोपकार का काम कर देना यह साबित नहीं करता, कि ऐसा जन इस अङ्ग के विचार के परोपकारी है। उच्च बोध या उच्च अङ्ग एक या दो बार लहरें उत्पन्न नहीं करता, एक या दूसरे समय में प्रकाश नहीं पाता, वह तो लगातार मनुष्य के हृदय में उच्च लहरें उत्पन्न करता है और लगातार उच्च क्रियाएं करता है। मैंने एक सच्ची कथा पढ़ी है, कि तीन चार साल की लड़की की माता गुज़र गई, उस के पिता पहले ही गुज़र चुके थे। उस यतीम और रोते हुए बच्चे का पड़ोसियों के हृदय पर उन की अवस्था के अनुसार जुदा २ असर हुआ। कुछ जनों ने वह भाव प्रकाश किया, कि हाय! यह लड़की कितनी अभागी है। यह कह कर संतुष्ट हो गए और अपने 2 घरों को चले गए। कुछ जनों ने यह भाव प्रकाश किया कि इस को एक यतीम खाने में पहुंचाया जावे और वहां तक पहुंचाने में जो खर्च हों, उस में हम मदद करने को तैयार हैं। कौन उस को यतीम खाना में पहुंचावे? उस के लिए कोई तैयार न था, यतीम खाना दो सौ मील के फ़ासले पर था, आख़िरकार एक स्त्री तैयार हो गई और

वह इस बच्चे का साथ लेकर चल पड़ी। रास्ते में वह एक स्टेशन पर उतर गई। वहां से शायद बस पर जाना पड़ता था, यह अपनी एक सहेली के यहां चली गई और उसको सारा माजरा सुनाया। उसकी सहेली के हृदय पर उस कन्या का बहुत गहरा असर हुआ। उस ने अपनी सहेली को कहा कि आप वापिस तशरीफ़ ले जाएं। मैं इस के लिए कुछ कपड़े बनवा दूं, वह भद्र स्त्री इस लड़की को अपनी सहेली के पास छोड़कर चली गई। अब इस दयावान स्त्री ने दरज़ी को बुलाया और कई प्रकार के कपड़े उस के लिए बनवाए। मुश्किल से चार पांच दिन गुज़रे थे, कि अचानक उस स्त्री ने उस लड़की को रोते हुए सुना। वह बिल बिलाकर पुकार रही थी, कि काश यदि मेरी अम्मा होती! तो ..... लड़की के इस प्रकाश ने इस स्त्री के हृदय पर जादू का असर किया। उस ने लड़की को छाती से लगा लिया और कहने लगी, कि क्या तुम मुझे अपनी अम्मा बनाओंगी? बच्चे की खुशी की हद्द न रही, और वह इस दयावान स्त्री को चिमट गई। और उस दयावान स्त्री का बयान है, कि यह लड़की बड़ी होकर मेरे सम्बन्ध में मेरी अपनी बेटी से भी बढ़कर कृतज्ञ प्रमाणित हुई है। अब इस दयावान स्त्री के हृदय में उस लड़की के लिए दया शक्ति फूट आई। बाकी स्त्रियों के हृदय में कुछ न कुछ भाव ज़रूर उत्पन्न हुआ लेकिन शक्ति रूप में नहीं।

उच्च जीवन के मुसाफ़िरों के लिए इस उच्च बोध के पाने की अत्यन्त आवश्यकता है, कि जीवन उच्च बोधों वा अङ्गों को शक्ति रूप में पाकर बनता है न कि भाव प्रकाश करने से। और किसी नीच सुख अनुराग से सत्य मोक्ष तब प्राप्त होती है, जब उच्च घृणा का भाव शक्ति रूप में वर्तमान हो। कभी २ किसी लहर का उत्पन्न होना काफ़ी नहीं है। न उत्पन्न होने से अच्छा है, परन्तु जो केवल लहरों की अवस्था में ही संतुष्ट रहते है वह अज्ञानी है। भगवान् देवात्मा तो उच्च घृणाओं और उच्च अनुरागों के उत्पन्न करने के कार्य में लगे हुए हैं, और जब तक हमारे हृदयों में यह उच्च अङ्ग शक्ति रूप से उत्पन्न नहीं होंगे, तब तक हमारी उन्नति का कार्य लगातार नहीं होगा, केवल भाव प्रकाश से हमारा मामला हल नहीं होगा।

हां कहें या न कहें

यदि डरकर या झिझक के कारण हम हर स्थान पर 'हां' कहते रहेंगे, तो हर कोई हमें दबाता ही चला जाएगा। नजायज़ फरमायश मानने या हर एक को हां कहने की आदत हमें निपुण या हर मन प्यारा नहीं, बल्कि डरपोक और कमज़ोर बनाती है। हम दूसरों को इसलिए हां करते रहते हैं कि इसे अपनत्व वा शान्ति बढ़ेगी और सम्बन्ध मधुर होंगे, परन्तु इस ढंग से सम्बन्ध मधुर नहीं बनते।

किसी को नाराज न करने वाले से विकास नहीं होता और उनके अस्तित्व का कोई स्पष्ट रूप भी नही पता लगता।

यदि हममें खुलकर अपनी राय प्रगट करने की दलेरी नहीं, ठीक को हां और ग़ल्त को न कहने का सलीका, या स्वाभिमान की भावना नहीं, फिर पद कोई हो, हमारी अलग पहचान नहीं बनती।

प्रत्येक बृताव के नियम होते हैं, दब्बू बनने के भी नियम हैं और निडर होने के भी नियम हैं। निडर व्यक्ति की अपने आपके बारे राय साफ होती है, उसके कर्मो और सोच में स्वतन्त्रता झलकती है। दब्बू व्यक्ति न कहने से डरता है और हर वक्त दो तरफी

सोच में डूबा रहता है।

प्रभावशाली व्यक्ति किसी ठीक काम को करने का साधन बनते हैं। परन्तु डरपोक व्यक्ति सब कुछ होने की इन्तज़ार में रहते हैं। धक्केबाज, चतुर और चालाक बनने की अवश्यकता नहीं परन्तु कुबड़े होकर चलने और हर एक के आगे झुकने से न करने की आवश्यकता है। लोगों की बड़ी गिणती इसलिए कहीं नहीं पहुंचती क्योंकि समय पर वह हां या न करने की दलेरी नहीं रखते । ऐसे लोग डर कर झुककर जीने के आदी हो जाते हैं। वह सोचते हैं कि यदि न कही तो दूसरे रूठ जांएगे।

न पसंद होने का भय, रद्द करने का डर, पीछे रह जाने की चिन्ता, या बेइज्ज़ती होने का सहम हमें अपने हक लेने नहीं देता। इसलिए हमारे सारे फैसले दूसरे ही करते रहते हैं। न कहने के स्थान पर हां कहने से हम अपने मनोबल को नष्ट करते हैं।

हां कहनी आसान है और न कहने से हम झिझकते हैं। हां कहने के मुकाबले में न कहने में अधिक ताकत, त्याग, दृड़ता और स्वाभिमान की ज़रूरत पड़ती है।

आरम्भ में न कहने वालों को अच्छा नही समझा जाएगा, परन्तु धीरे धीरे न कहने वाले की बात अधिक ध्यान के साथ सुनी जाने लगती है।

अच्छी आदतों का दबदबा होता है, जिस प्रकार सुन्दरता का रोब होता है वैसे ही विद्वता का रोब होता है। रोब अच्छी आदतों और अपने कार्य में निपुणता से उपजता है। रोब वह गुण होता है, जिसके लिए अपने आप दूसरों के मनों में सत्कार पैदा हो। ऐसे रोब वाले लोगों की हां या न में ताकत होती है, ऐस व्यक्ति लम्बे नहीं ऊंचे होते हैं। वह गोरे चाहे न हों परन्तु सुन्दर लगते हैं। इनकी अलग पहचान होती है, जो दूसरों को आकर्षित करते हैं।

एक कालिज में फिलासफी के प्रोफैसर होत थे, जिनके ज्ञान वा शख्सीयत का सारे कालिज पर रोब था। विद्यार्थी उनके बारे में ही बातें करते, छुप छुपकर उन्हें देखते रहते। उनसे उन्होंने सीखा कि अमीरी उसके पद या जायदाद से नहीं, व्यवहार से परखी जाती है।

एक बार कालिज के विद्यार्थियों ने हड़ताल कर दी। कालिज के प्रबन्धकों ने बातचीत सुनने के बाद मांगे मानने से इन्कार कर दिया। तो विद्यार्थियों ने कहा कि यदि फलां प्रोफैसर यह कहदे कि हमारी मांगे अनुचित हैं, तो हम हड़ताल वापिस ले लेंगे, क्योंकि उन्हें पता था कि वह ग़ल्त बात पर प्रबन्धकों की हां में हां नहीं मिलाएगा। प्रबन्धकों के पूछने पर प्रोफैसर साहिब ने कहा कि विद्यार्थियों की तीन मांगों में से दो मांगे वाजिब हैं। उनके इस तर्क को प्रबन्धकों ने और विद्यार्थियों ने मान लिया।

अपनी दृड़ता के कारण हर स्थान पर आप अपनी मांग मनवा सकते हैं। इससे स्वाभिमान भी उपजता है। ऊंची सोच के बिना स्वाभिमान नहीं उपजता। महापुरुष अपनी ऊंची सोच के कारण ही महापुरुष कहे जाते हैं।

सारे महापुरुष अपने ढंग के साथ जीए हैं और अपने आदर्शों और असूलों को तोड़ने से उन्होंने न कह दी।

इतिहास में नाम उनका ही होता है, जो शक्तिशाली के आगे भी झुकने से न कहने की दलेरी रखते हैं। बड़ी कुर्बानी की तरह दलेरी भरी न अपने आपको दांव पर लगाने के चाव से उपजती है।

यदि हम आज आज़ाद हैं, तो इसके पीछे हज़ारों लोगों की गुलामी को न कहने वाली कुर्बानियां खड़ी हैं।

जिन्दा मछली पानी के बहाव के विरूद्ध चलती है। केवल मरी हुई मछली बहाव के साथ बहती है।

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

न कहनी कितनी मुश्किल है, यह जानने के लिए नींद को न कहकर देखो। बुरे कामों को न कहना और भी मुश्किल है। चरित्र की शक्ति के बिना न कहनी संभव ही नहीं होती।

जब तक हम आप निर्णय नहीं करते कि मैं कौन हूं, मेरा उद्धेश्य क्या है, तब तक हम हां या न का फैसला भी नहीं कर सकते। ठीक कार्य को करना नहीं होता, कठिन होता है यह जानना कि ठीक कारज क्या है?

जो अपने अधिकारों के प्रति सुचेत नहीं होते, वह अपने कर्तव्य भी नहीं पालते, वह सोच के पक्ष में भी स्वतन्त्र नहीं होते। शिष्टाचारिता से हाज़िर जवाबी और मौके अनुसार, ज़रुरत अनुसार बात करने की योग्यता, हमारी सही सोच और हमारे स्वतन्त्र व्यवहार की पक्की निशानी होती है। हां या न स्पष्ट होनी चाहिए।

यदि कोई उधार ले चुका है और वापिस किए बिना और लेने आया है उसे मोटी न कहने की अवश्यकता है।

यदि हमारी न में मजबूत होगी, तो हमारी हां की ताकत बढ़ जाएगी।

ठीक समय पर हां या न कहने से बड़ी बड़ी क्रान्तियां जन्म लेती है। बग़ावतें बड़े बड़े तख़्ते पलट देती हैं। हमें यह जानने की अवश्यकता है कि हम भीरु बनकर जीना चाहते हैं या बहादुर बनकर ठीक फैसले के साथ खड़े होकर अच्छे उद्धेश्य को पूरा करते हैं।

आप अण्डा खा रहे हैं या अण्डा आपको

मनुष्य में धन कमाने की लालसा या वासना तीव्र हुई है। वह पशु पक्षियों के शरीर के साथ खिलवाड़ करने लगा है। हम जैसे जैसे प्रकृति की स्वभाविकता को दूषित (भंग) करते हैं, प्रकृति भी हमारे सहज स्वभाविक जीवन की सहजता और स्वभाविकता को दूषित, विनष्ट और ध्वस्त करती है। किस्म किस्म की बीमारियां फैलती हैं और तरह-तरह के सामाजिक असंतुलन जन्म लेते हैं। कत्ल, क्रूरता, हत्या, आतंकवाद, हिंसा को बढ़ावा देने में अण्डा व मुर्गी उत्पादन गृह का भी उतना ही हाथ है, जितना बूचड़खानों का। धिक्कार है हम फिर भी हिंसा से बाज नहीं आ रहे हैं। धड़ाधड़ नई पोल्ट्रियां और बूचड़खाने खुल रहे हैं।

अहिंसा में आस्था रखने वालों के लिए अण्डा पूरी तरह अभक्ष्य और वर्ज्य है। मुर्गीपालन से लेकर अण्डा प्रजनन तक हिंसा ही हिंसा होती है। मुर्गी को

शेष पृष्ठ 2 में

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts